द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

द्वितीय अध्याय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

भूमिका :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन कार्य है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्रारंभिक तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह विज्ञान के क्षेत्र का हो या सामाजिक विज्ञान का साहित्य का पुनरावलोकन अनिवार्य चरण है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन के लाभ :–

1. संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधायक को अन्य व्यक्तियों द्वारा किए गए कार्य से पूर्ण परिचय होता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
4. पूर्व अनुसंधानों से अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।
5. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करने से यह पता चलता है कि पिछले अनुसंधायकों ने अपने अध्ययन में और आगे अनुसंधान के लिए क्या अनुशंसाएँ की थी।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

पूर्व शोध कार्य का आंकलन :-

उपरोक्त शोध संबंधी साहित्य, विविध समितियों में मूल्यों के प्रति सुझाव एवं समस्या संबंधित शोध कार्य का वर्णन प्रस्तुत अध्याय में किया है, जो निम्न प्रकार से है।

राधाकृष्णन् आयोग (1948-49) :-

राधाकृष्णन आयोग ने मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना। आयोग के अनुसार विद्यालय स्तर पर छात्रों का नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों को व्यक्त करने वाली कहानियां पढ़ाई जाएं। छात्रों को महान व्यक्तियों की जीवनियों पढ़ाई जाएं।

श्री प्रकाश समिति (1959) :-

इस समिति ने धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा के संबंध में यह सुझाव दिया कि विद्यार्थियों को सब धर्मो के आधारभूत विचारों की शिक्षा तुलनात्मक विधि से दी जाए। जैसे जैसे छात्रों का मानसिक विकास होता जाए, वैसे-वैसे उनको नेतिक, दार्शनिक और आध्यात्मवादी सिद्धान्तों से परिचित कराया जाए।

शिक्षा आयोग (1964-66) :-

विद्यालय स्तर में विद्यार्थियों को आधारभूत नैतिक सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए। यथा सत्य, ईमानदारी, सामाजिक उत्तरदायित्व, पशुओं पर दया, बुजुर्गो के प्रति सम्मान, दुःखी और दरिद्रों के प्रति सहानुभूति इत्यादि। विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में संसार के सब धर्मो को उचित स्थान दिया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1979) :-

इस नीति में सार्वभौम प्रारंभिक शिक्षा को उच्चतम प्राथमिकता प्रदान की गई। इस शिक्षा में भाषा, गणित, विज्ञान, सांस्कृतिक मूल्येां आदि विषयों के

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) :-

शिक्षा संस्कृति बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर बनाती है, जिससे राष्ट्रीय एकता पनपती है। साथ ही शिक्षा हमारे प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा लोकतंत्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में अग्रसर होने में हमारी सहायता करती है।

इस बात पर गहरी चिन्ता प्रकट की जा रही है कि जीवन के लिये आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से ही लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। शिक्षाक्रम में ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है जिससे सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक सशक्त साधन बन सके।

हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहुआयामी है। इसलिए शिक्षा द्वारा उन सार्वभौमिक और शास्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हमारे लोगों को एकता की ओर ले जा सके। इन मूल्यों में अंधविश्वास कट्टरता, असहिष्णुता, हिंसा और भाग्यवाद का अन्त करने में सहायता मिलनी चाहिए।

Anand, A.S. (1980). "Teacher's values and job Satisfaction".

इस शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के मूल्यों और उनकी कार्य संतुष्टि में संबंध को खोजना ।

इस शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में कुल 143 शिक्षक (99 पुरूष व 44 महिलायें) लिये गये जो कि सिक्किम के विभिन्न स्कूलों में अध्यापन का कार्य करते थे। एक कार्य संतुष्टि और ऑलपोर्ट बर्नोन लिप्डजे की मापनी का उपयोग किया गया। अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि पुरूष शिक्षकों में शोध उपरान्त राजनैतिक और आर्थिक मूल्यों को अधिक पाया जबकि महिला शिक्षिकाओं में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मूल्य अधिक देखे गये। धार्मिक और सौंदर्यात्मक मूल्य निम्न स्तर पर महिला और पुरूष शिक्षकों में पाये गये। पुरूषों की तुलना में महिलाओं में कार्य संतुष्टि अधिक थी। यह भी देखा गया कि धार्मिक और सौंदर्यात्मक मूल्य और शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सकारात्मक सह संबंध थे।

Husnai, N. and Adhikari, G.S. (1986)." Values among trainee and non trainee girls".

इस शोध में प्रशिक्षणार्थी और अप्रशिक्षणार्थी छात्राओं में मूल्यों का वर्णन करना है। कुछ 66 छात्राओं हायर सेकण्ड्री बी.टी.सी. ट्रेनिंग और नर्सिंग प्रशिक्षण महाविद्यालय से न्यादर्श के रूप में ली गयी ऑलपोर्ट बर्नन लिण्डले के मूल्य अध्ययन की मापनी का हिन्दी (ओझा) का उपयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषण के लिये मध्यमान और 't' परीक्षण किया गया। डंकन रेज यह प्रदर्शित करता है कि प्रत्येक छात्रा में राजनैतिक, सामाजिक, सैद्धांतिक मूल्यों की अधिकता पायी गयी जबकि नर्सिंग कॉलेज की छात्राओं में आर्थिक और सामाजिक मूल्यों का दूसरा स्थान दिया। हायर सेकण्ड्री की छात्राओं ने आर्थिक, धार्मिक और सौदर्यात्मक मूल्यों को द्वितीय स्थान दिया। 't' परीक्षण का भी उपयोग किया गया। विभिन्न प्रशिक्षणार्थियों द्वारा मूल्यों को भिन्न भिन्न प्राथमिकता प्रदान का मुख्य कारण उनके अपने अपने क्षेत्र की मूल्य प्राथमिकता पर बल देना था।

बोहरा एस.पी (1986) :-

शिक्षकों के प्रभाव का मूल्यों से संबंधित शोध कार्य किया। इस शोध कार्य में शिक्षकों के प्रभाव और उनके मूल्यों के बीच संबंध का वर्णन करना है। कुल 240 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का चयन किया गया। इन शिक्षकों को शिक्षक प्रभाव मापनी (कुमार एवं मुरै, 1973) के आधार पर प्राप्त अंकों के द्वारा दो समूहों में विभाजित किया गया। कुल 60 प्रभावी और 60 अप्रभावी शिक्षकों को चुना गया। शिक्षक प्रभाव ऑलपोर्ट बर्नन लिण्डजे का उपयोग किया गया। मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' टेस्ट के द्वारा आंकड़ों का सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्य इन छः मूल्यों में से सिर्फ तीन मूल्यों में है। प्रभावी और अप्रभावी शिक्षकों में भिन्नता पायी गयी। प्रभावी शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्यों का उच्च स्थान रहा और आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य अप्रभावी शिक्षकों में उच्च रहे और यह भी पाया गया कि अप्रभावी शिक्षकों में बहुत अधिक वास्तविक प्रवृत्ति होती है।

Gupta, R.R. (1987)/ "A Study of values of B.Ed. Pupil teacher's of Avadh University".

इस शोध का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों द्वारा पालन किये जाने वाले मूल्यों की खोज करना था।

न्यादर्श के रूप में अमेठी के 90 ग्रामीण एवं शहरी छात्राध्यापकों को चुना गया। प्रदत्त संकलन के विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन को निकाला गया। शहीर-छात्र शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण शिक्षकों में धार्मिक मूल्य उच्च स्तर पर थे। जबकि शहरी छात्र शिक्षकों में ग्रामीण छात्र शिक्षकों की तुलना में राजनैतिक आर्थिक मूल्य उच्च थे। सौंदर्यात्मक और धार्मिक मूल्य महिला छात्र शिक्षिकाओं की तुलना में पुरूष छात्र शिक्षकों में अधिक पाये गये।

महेश्वरी पी.सी. (1989).

रोहिलखंड विद्यापीठ के सामान्य, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति के शिक्षकों प्रशिक्षकों का अध्यापन अभिवृत्ति तथा मूल्य बुद्धि, लिंग के संबंध का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक-प्रशिक्षकों में मूल्य एवं अध्यापन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना था। उपरोक्त वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों में लिंग भेद का अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना था। रोहिलखंड विद्यापीठ के 10 कॉलेजों से सामान्य वर्ग के 426 शिक्षक-प्रशिक्षक, पिछड़े वर्ग के 95 शिक्षक-प्रशिक्षक अनुसूचित जाति के 97 शिक्षक-प्रशिक्षक को न्यादर्श के रूप में चुना गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए निम्न उपकरणों का उपयोग किया।

1. अहलूवालिया एस.पी. द्वारा निर्मित शिक्षकों की अभिवृत्ति सूची।
2. आर.के. टंडन द्वारा निर्मित समूह बुद्ध परीक्षण।
3. आर.के. ओझा द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण।

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए 'टी' परीक्षण तथा सहसंबंध का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह आया कि अनुसूचित ज़ाति एवं पिछड़े वर्ग की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकोम अध्यापन अभिवृत्ति प्राप्तांक में सार्थकता पायी गयी। स्त्री पुरूष शिक्षक-प्रशिक्षको में अध्यापन अभिवृत्ति के अंतर में सार्थकता नहीं पायी गयी। सामान्य वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों में अन्य दो वर्गो की अपेक्षा अध्यापन अभिवृत्ति अधिक देखने को मिली।

अत्रेय एवं जयशंकर (1989).

शिक्षकों के मूल्य एवं कार्य संतुष्टि में निम्न औसत एवं उच्च अध्यापन प्रभावशालीता का अध्ययन किया। इसका मुख्य उद्देश्य-शिक्षकों के निम्न, औसत एवं उच्च अध्यापन प्रभावशीलता तथा मूल्य और कार्य संतुष्टि के मात्रा को जानना।

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 600 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक पद्धति से किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये गिलानी तथा कुमार द्वारा विकसित किये गये उपकरण का उपयोग किया गया। कुमार एवं माथुर द्वारा विकसित किये गये उपकरण का उपयोग किया गया। इसका निष्कर्ष यह आया कि अध्यापन प्रभावशीलता अंशतः कोटि पर मूल्य तथा कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

मोहगांवकर. पी. (1990).

कक्षा छठवीं, सातवी, आठवी की मराठी मातृभाषा पाठ्यपुस्तकों में नैतिक मूल्यों का प्ररीक्षण किया गया। पाठ्यपुस्तक में मानवीय मूल्यों पर्याप्त रूप से प्रकीर्णन की खोज करना इन उद्देश्यों को उपरोक्त शोधकार्य में लिया गया। कक्षा छठवीं, सातवी, आठवीं की मराठी पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण तथा उपरोक्त शोध कार्य में अनेक नैतिक व मानसिक मूल्यों को ध्यान में रखा गया। इस अध्ययन से यह पाया गया कि, कक्षा सातवी के पाठ्यपुस्तक में चार गद्य तथा तीन पद्य समानता पर आधारित है। तीनों की कक्षा के पाठ्यपुस्तक में भाईचारा मूल्यों का संदर्भ नहीं है। कक्षा छठवीं के पाठ्यपुस्तक के पाठ्यवस्तु में स्वतंत्रता मूल्यों का संदर्भ नहीं है। परन्तु कक्षा सातवीं, आठवीं के पाठ्यपुस्तक में स्वतंत्रता मूल्यों का संदर्भ है।

वैज्ञ.डी.एस. (1991) :-

कक्षा दसवीं की पदार्थ विज्ञान पाठ्यपुस्तक के पाठ्यवस्तु में मानवीय मूल्यों का अध्ययन किया। विज्ञान को जीवन का आधारभूत बनाना एवं जाति, धर्म, क्षेत्र भाषा में अंधविश्वास, भेद के प्रति विद्यार्थियों को अवगत कराना एवं

सक्षम बनाना यह शोध के मुख्य उददेश्य रखे गये। प्रस्तुत शोध कार्य में तुल्य समुह डिजाईन का प्रयोग किया गया। कक्षा दसवीं के 38 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन करके उनको 19 जोड़ियों में विभाजित किया। यह जोड़ियां कक्षा 9वीं की पदार्थ विज्ञान विषय में वार्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों को ध्यान में रखकर बनाई गयी थी। प्रदत्तों के संकलन के लिये दसवीं के पाठ्यपुस्तक में नाटकात्मक पद्धति एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये माध्य, प्रमाणिक विचलन, समालोचन अनुपात का प्रयोग किया गया। इस शोध कार्य में यह पाया गया कि विज्ञान विषय विद्यार्थियों के नैतिक विकास में मदद करता है। पदार्थ विज्ञान में मूल्यों के विकास के प्रति परम्परागत अध्यापन पद्धति से नाटकीय पद्धति अधिक प्रभावी है।

Kumar, A. (1991). "Values of Pupil teacher's the Primary teacher".

इस साहित्य लेख में छात्र शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों के अध्ययन का उल्लेख किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रारम्भिक और हायर सेकण्ड्री महिला और पुरूष छात्र शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों की तुलना करना था। हरियाणा राज्य के कुल 200 छात्र शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली प्रदान की गई जिसमें कि सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, प्रजातांत्रिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, वीरता, शक्ति पारिवारिक, सम्मान जनक और स्वास्थ्य संबंधी मूल्यों का समावेश था। मूल्यों के अंतर जानने के. लिये 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणाम यह बताते हैं कि प्राथमिक विद्यालय में छात्र–शिक्षक अधिक धार्मिक एंव भगवान से डरते थे। तथा सौंदर्यात्मक मूल्य को अधिक महत्व देते है। जबकि हायर सेकण्ड्री के शिक्षक अधिक और विशिष्ट ज्ञान रखते थे तथा परिवार के सम्मान के बारे में ज्यादा विचार रखते थे। प्राथमिक विद्यालय की महिला प्रशिक्षणार्थी बहुत कम खर्चीली थी, जबकि सेकेण्ड्री विधालय की महिला छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थी बहुत अधिक सामाजिक थी। दूसरे मूल्यों में अंतर उपरोक्त मूल्यों की तुलना में

Mistry, T.C. (1998). "A Comparative study of attitudes, Values and personality characteristics of rural, urban and non Gujarati College and Secondary teachers".

यह शोध उस अध्ययन को व्यक्त करता है, जिसके द्वारा उन कारकों को खोजा गया जिनके मूल्यों, अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अंतर पाया जाता है। इस अध्ययन हेतु ऑलपोर्ट बर्नन लिण्डजे की प्रश्नावली, एडवर्ड की व्यक्तिगत महत्व अनुसूची और मूरे की व्यक्तिगत आवश्यक परीक्षण गुजरात के ग्रामीण और शहरी 111 शिक्षकों पर यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया। अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों का एक नियंत्रित ग्रुप भी न्यादर्श के रूप में लिया गया। परिणाम प्रकट करते है जो अगुजराती थे वे अधिक आत्मकेन्द्रित और अधिक अध्ययनशील थे, जबकि ग्रामीण-हरी गुजराती शिक्षक लोग केन्द्रित थे। संघ संचेतक थे। आर्थिक रूप से केन्द्रित और बहुत अधिक धार्मिक थे।

Ramachandra, A. Babu. P. Sreedhar and Reddy, D./ (2003)/ "Attitude of Primary School teachers towards values oriented education."

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पुरूष व स्त्री शिक्षकों में मूल्य परख शिक्षा संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर की खोज करना, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में मूल्य परख शिक्षा संबंधी अभिवृत्ति में संबंध खोजना तथा विभिन्न आयु के शिक्षकों में मूल्य परख शिक्षा की सार्थक अन्तर को पहचानना।

आन्ध्रप्रदेश राज्य के विभिन्न जिलों के प्रकाशन मण्डल में 300 प्राईमरी स्कूल में कार्यरत शिक्षकों को यादृच्छिक चयन से लिया गया है। प्रदत्त संकलन के लिये पांच बिन्दु मापनी प्रयोग की गयी हैं।

लिंग के आधार पर पुरूष व स्त्री शिक्षकों में मूल्य परख शिक्षा संबंधी अभिवृत्ति में कोई अन्तर नही पाया गया। स्थान के आधार पर ग्रामीण शहरी शिक्षकों में मूल्य परख शिक्षा संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अनतर पाया गया तथा विभिन्न आयु वर्ग के शिक्षकों में मूल्य शिक्षा संबंधी अभिवृतित में कोई अन्तर नहीं पाया गया।